मीरांबाई

मेरे तो गिरधर[1] गोपाल[2] दूसरो न कोई।।

माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े सगा सोई।

साधाँ[3] संग बैठ बैठ लोक लाज खोई।।

सन्त देख दौड़ि आई, जगत देख रोई।

प्रेम आँसू डार डार[4] अमर बेल[5] बोई।।

मारग[6] में तारण[7] मिले सन्त नाम दोई[8]।

सन्त सदा सीस[9] पर नाम हृदै[10] होई।।

अब तो बात फैल गई, जानै सब कोई।

दासि मीरा लाल गिरधर, होई सो होई।।1।।

हे री मैं तो प्रेम दिवानी, मेरा दरद न जाने कोय।।

सूली[11] ऊपर सेज हमारी, किस बिध[12] सोना होय।

गगन मंडल[13] पर सेज पिया की, किस बिध मिलना होय।।

घायल की गति घायल जानै, कि जिन लागी होय।

---

1. पर्वत (गोवर्धन) को धारण करने वाला अर्थात श्री कृष्ण 2. गौ पालने वाले, श्री कृष्ण 3. साधु 4. डालकर, सींच कर 5. एक लता जो फैलती चली जाती है 6. मार्ग, रास्ता 7. उद्धार करने वाला 8. दो 9. सर, माथा 10. हृदय 11. नोकदार वस्तु जिस पर चढ़ाकर मृत्युदंड दिया जाता है 12. विधि, तरीका, प्रकार 13. शून्य चक्र (निर्गुण भक्ति में ब्रह्म का स्थान)

जौहरी[14] की गति जौहरी जाने, कि जिन जौहरी होय।।

दरद की मारी बन बन डोलूँ वैद मिल्यो नहीं कोय।

मीरां की प्रभु पीर मिटै जब वैद सांवलया[15] होय।।2।।

साँप पिटारो[16] राणा भेज्यो

मीरां हाथ दियो जाय।

न्हाय[17] धोय जब देखन लागी

सालिगराम[18] गई पाय।।

जहर का प्याला राणा भेज्यो

अमरित दियो वणाय।

न्हाय धोय जल पीवण लागी

अमर हो गई जाय।।

सुल सेज राणा ने भेजी

दीजो मीरा सुवाय।

साँझ भई मीरा सोवण लागी

मानो फूल बिछाय।।

---

14. जवाहरात का व्यवसाय करने वाला, पारखी 15. साँवले शरीर वाले अर्थात श्री कृष्ण 16. बाँस की ढक्कनदार टोकरी 17. स्नान कर 18. शालिग्राम = एक प्रकार का पत्थर जिसे ईश्वर स्वरूप माना जाता है

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

'मीरां' के प्रभु सदा सहाई

राखो विघन[19] हटाय।

भक्ति भाव में मस्त डोलती

गिरधर पै बलि[20] जाय।।3।।

मैं अपने सैयाँ संग साँची[21]।

अब काहे की लाज सजनी, परगट[22] हो नाची।।

दिवस[23] भूख नहिं चैन होय कबहूँ नींद निसि[24] नासी[25]।

वेध[26] वार को पार हो गयो, ग्यान गुन गाँसी[27]।।

कुल कुटुंब[28] सब ही आन बैठे, जैसे मधुमासी[29]।

दासी मीरां लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी।।4।।

श्री गिरधर आगे नाचूँगी।

नाच नाच पिव रसिक[30] रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी।

प्रेम प्रीत के बाँध घूँघरू, सुरत की कछनी[31] काछूँगी[32]।।

लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी।

पिया के पलंगा जा पौढ़ूँगी[33], मीरां हरि रंग राचूँगी[34]।।5।।

---

19. कष्ट, बाधा 20. न्यौछावर 21. एकाकार 22. प्रकट, प्रत्यक्ष, सामने आकर 23. दिन 24. रात 25. नष्ट होना, मिट जाना 26. बेधना 27. गीत गाना 28. स्वजन, संबंधी 29. चैत का महीना, वसंत का समय 30. कृष्ण 31. वस्त्र 32. बनना 33. लेटना 34.रंग में रंग जाना (रंग राचूँगी)

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

होरी पिया बिन लागे खारी[35], सुनि री सखी मेरी प्यारी।।

सूनों गाँव देस सब सूनों, सूनी सेज अटारी[36]।

सूनी विरहन पिय बिन डोले, तज दई पीव पियारी।।

भई हूँ या दुःखकारी।।

देस विदेस संदेस न पहुँचै, होय अंदेसा[37] भारी।

गिणतां गिणतां घस गई रेखा, आँगुरियाँ की सारी।

अजहुँ नहिं आये मुरारी[38]।।

बाजत झांझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।

आई बसंत कंत[39] घर नाहीं, तन में ज्वर[40] भया भारी।

श्याम मन कहा विचारी।।

अब तो मेहर[41] करो मुझ ऊपर, चित्त[42] दै सुणो हमारी।

मीरां के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की कुँवारी।

लगी दरसन की तारी[43]।।6।।

मेरे मन राम नाम बसी।

तेरे कारण स्याम सुन्दर, सकल[44] लोगाँ हँसी।।

---

35. फीकी, आनंद रहित 36. अट्टालिका, महल 37. आशंका, चिंता 38. श्रीकृष्ण 39. पति 40. ताप, बुखार 41. कृपा, दया 42. मन 43. प्यास 44. सभी

कोई कहै मीरा भई बावरी[45], कोई कहे कुल[46] नासी।
कोई कहै मीरा दीप आगरी[47] नाम पिया सूँ रसी[48]।।
खाण्ड[49] धार भक्ति की न्यारी, काटि है जम[50] फाँसी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सबद[51] सरोवर धाँसी।।7।।
आओ सहेलियाँ रली[52] करो हे परघर[53] गवण[54] निवार[55]।।
झूठा माणिक मोतिया री झूठी जग मग जोत।
झूठा सब आभूषणाँ री साँची पिया जी री पोत[56]।।
झूठा पाट[57] पटंबरा[58] रे झूठा दिखणी चीर[59]।
साँची पियाजी री गूदड़ी[60] जा में निरमल रहे सरीर।।
छप्पन भोग बुहायदौ[61] हे इण भोगन में दागे।
लूण[62] अलूणों ही भलो हे अपणो पिया जी रो सागे।।
देखि बिराणे[63] निवाँण[64] कूँ हे क्यूँ उपजावै[65] खीज।
कालर[66] अपणो ही भली हे जामें निपजे[67] चीज।।
छैल[68] बिराणों लाख कोहे अपणे काज न होय।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

---

45. पागल 46. वंश, घराना 47. आग 48. मिलन के संदर्भ में 49. तलवार 50. यमराज 51. शब्द, उपदेश 52. क्रीड़ा, खेल 53. दूसरे के घर 54. गमन 55. रोकना 56. माला 57. वस्त्र 58. रेशमी वस्त्र 59. कपड़ा, वस्त्र 60. चिथड़ा, जीर्ण वस्त्र 61. जल में बहा देना 62. नमक 63. पाराए 64. हरी-भरी जमीन 65. पैदा करना, उत्पन्न करना 66. खारी ऊसर भूमि 67. उपजना 68. बाँका, रंगीला पुरुष, रसिक व्यक्ति

ता के संग सिधारताँ[69] हे भला न कहसी कोय।।

वर हीणो[70] अपणो भलो हे कोढ़ी कुष्टी होय।

जा के संग सिधारताँ है भला कहै सब कोय।।

अविनासी[71] सूँ बालबाँ[72] जिन सूँ साँची प्रीत।

मीरा कूँ प्रभु जी मिल्या एही भक्ति की रीत।।8।।

जो तुम तोड़ो, पिया मैं नहीं तोड़ूँ।

तोसों प्रीत तोड़ कृष्ण! कौन संग जोड़ूँ।।

तुम भये तरुवर[73] मैं भई पँखिया[74]।

तुम भये सरोवर मैं तेरी मछिया[75]।।

तुम भये गिरिवर मैं भई चारा[76]।

तुम भये चंदा[77] मैं भई चकोरा[78]।।

तुम भये मोती, प्रभु हम भये धागा।

तुम भये सोना, हम भये सोहागा।

मीरा कहे प्रभु व्रज के वासी।

तुम मेरे ठाकुर[79] मैं तेरी दासी।।9।।

---

69. गमन, आना-जाना 70. हीन, साधारण 71. जिसका नाश न हो, ईश्वर 72. बालम, पति 73. वृक्ष 74. पक्षी 75. मछली 76. घास 77. चंद्रमा 78. चकोर पक्षी 79. मालिक, भगवान

मैंने नाम रतन[80] धन पायौ।

बसत[81] अमोलक[82] दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपणायो।।

जनम जनम की पूँजी पाई जग मैं सवै खोवायो[83]।

खरचै नहिं कोई चोर न ले वे दिन-दिन बढ़त सवायो।।

सत की नाँव खेवटिया[84] सतगुरु भवसागर[85] तरि आयो।

मीरां के प्रभु गिरधर नागर हरखि[86] हरखि जस[87] गायो।।10।।

---

80. रत्न 81. वस्तु 82. अनमोल, जिसका कोई मूल्य न हो 83. खो देना 84. खेने वाला 85. संसार रूपी सागर 86. हर्ष के साथ 87. यश